# इकाई 2 उच्चरित और लिखित भाषा : सम्प्रेषण के तत्व

**इकाई की रूपरेखा**


2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 उच्चरित भाषा की प्रकृति
2.3 लिखित भाषा की प्रकृति
2.4 उच्चरित और लिखित भाषा के भेद
2.5 उच्चरित और लिखित भाषा की विशेषताएँ
2.6 उच्चरित भाषा के प्रकार्य
2.7 लिखित भाषा के प्रकार्य
2.8 बोलचाल की भाषा का लिप्यंकन
2.9 लिखित भाषा पर उच्चरित भाषा का प्रभाव
2.10 सारांश
2.11 शब्दावली
2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें
2.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर


## 2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप भाषा के उच्चरित (बोलचाल) तथा लिखित रूपों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा के भेद को समझ सकेंगे।
- बोलचाल की भाषा की प्रकृति और उसके आधारभूत तत्वों को जान सकेंगे।
- लिखित भाषा की प्रकृति और उसके आधारभूत तत्वों को जान सकेंगे।
- बोलचाल की भाषा के लिप्यंकन की विधि का विश्लेषण कर सकेंगे।
- लिखित भाषा में बोलचाल के तत्वों को प्रस्तुत करने की विधि बता सकेंगे।
- उच्चरित और लिखित भाषा के प्रकार्यों और इनके सामाजिक महत्व को समझा सकेंगे।

## 2.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक बनने के लिए उसके पास भाषा एक माध्यम है। मनुष्य का समाजीकरण भाषा द्वारा ही संभव होता है। अपने परिवार, परिवेश और फिर व्यापक समाज में भाषा का प्रयोग करते हुए ही मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। इस आदान-प्रदान को ही हम सम्प्रेषण (Communication) भी कहते हैं। मानव समाज में सम्प्रेषण एक अनिवार्य घटक है। इसका तात्पर्य यह है कि अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में मनुष्य के पास सबसे सशक्त माध्यम भाषा ही है। भाषा लोगों को एक दूसरे के नजदीक ले आती है। सहमति-असहमति, विरोध, घृणा, प्रेम आदि को हम भाषा के द्वारा ही व्यक्त या संप्रेषित करते हैं। मनुष्य के पास सम्प्रेषण के लिए भाषा के दो रूप उपलब्ध हैं, एक को हम **भाषा का उच्चरित रूप** कह सकते हैं और दूसरे को **भाषा का लिखित रूप**। इस इकाई में भाषा के इन दोनों रूपों पर विस्तार से विचार किया जाएगा।

हम इस इकाई में उच्चरित और लिखित भाषा की प्रकृति और इनके स्वरूप पर भी चर्चा करेंगे। इन दोनों के भेदों और इनकी विशेषताओं पर भर भी इस इकाई में प्रकाश डाला जाएगा। इस इकाई में यह भी बताने की कोशिश की जाएगी कि सम्प्रेषण की दृष्टि से ये दोनों रूप समाज में किस प्रकार कार्य करते हैं और इनमें से किसका कितना महत्व है। इसके साथ ही उच्चरित और लिखित रूपों के प्रकार्यों पर भी इस इकाई में चर्चा की जाएगी।

यह हम सभी जानते हैं कि विचारों के आदान-प्रदान की दृष्टि से, भाषा के विचार विनिमय की दृष्टि से और सम्प्रेषण की दृष्टि से भाषा के उच्चरित और लिखित, दोनों ही रूपों का योगदान होता है। लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि इन दोनों की रूप संरचना में पर्याप्त अंतर होता है। दोनों का प्रयोग क्षेत्र भी भिन्न है और दोनों मानव समाज की सम्प्रेषण संबंधी अलग-अलग आवश्यकताओं की पूर्ति

करते हैं। इस दृष्टि से इन दोनों भाषा रूपों में पाए जाने वाले अन्तरों की चर्चा भी इस इकाई में की जाएगी।

उच्चरित और लिखित भाषा पर तुलनात्मक दृष्टि से यदि विचार करें तो इन दोनों के अन्तरों को समझा जा सकता है। उच्चरित रूप से ही लिखित रूप का विकास होता है इसलिए ये दोनों परस्पर एक दूसरे को प्रभावित भी करते रहते हैं। इन प्रभावों पर भी हम हिन्दी भाषा के संदर्भ में इस इकाई में विचार करेंगे।

प्रस्तुत इकाई में बोलचाल की भाषा के लिप्यंकन और लिखित भाषा में उच्चरित भाषा की विशेषताओं को ले आने की प्रवृत्ति पर भी चर्चा की जाएगी। हमें यह ध्यान देना होगा कि भाषा या वाणी का सामाजिक सम्प्रेषण में प्रयोग केवल बोलने में ही नहीं, लिखने में भी प्रकट होता है। बोलते समय अनेक प्रकार की शारीरिक अनुक्रियाएँ और चेष्टाएँ भी हम करते हैं। यदि आप अपने मौखिक (उच्चरित) भाषा व्यवहार पर गौर करें तो आप पायेंगे कि हमारी मुखमुद्रा, आँखों की भंगिमा तथा अंगों प्रत्यंगों का संचालन हमारे सम्प्रेषण में कितना सहायक होता है। इनके सहयोग के बिना उच्चरित कथन सुनने वाले तक पूरी तरह सम्प्रेषणीय हो ही नहीं सकता। इसी प्रकार लेखन में शब्दों का चयन, उनका संयोजन और उनके बीच विरामों की व्यवस्था जब तक सुचारु रूप में नहीं होती तब तक लिखित मन्तव्य (कथन) स्पष्ट नहीं हो पाता है। इन दृष्टियों से भी इस इकाई में विचार किया जाएगा।

## 2.2 उच्चरित भाषा की प्रकृति

अभी हमने यह जाना कि भाषा मानव समुदाय के सदस्यों को एक दूसरे के निकट लाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। हम अपनी बात किसी दूसरे तक पहुँचाने के लिए भाषा का ही प्रयोग करते हैं। यह काम हम दो तरीकों से कर सकते हैं, एक तो बोल कर और दूसरे लिखकर। बोल कर अपनी बात हम उच्चरित भाषा के माध्यम से पहुँचाते हैं। उच्चरित रूप के माध्यम से सम्प्रेषण के लिए यह जरूरी है कि सुनने वाला (श्रोता) हमारे सामने हो। समाज में यह एक सच्चाई है कि उच्चरित भाषा का अस्तित्व समाज के लिए अनिवार्य है। यह तो आप जानते हैं कि मानव-शिशु जन्म लेने के कुछ ही वर्षों बाद अपनी मातृभाषा को बोलना शुरू कर देता है। भाषा के उच्चरित रूप को वह अपने परिवार, परिवेश और समाज में अर्जित करता है। उच्चरित रूप का यह अर्जन मानव-शिशु अनुकरण के द्वारा करता है और यह प्रयास करता है कि जिस तरह उसके संपर्क में आने वाले लोग बोलते हैं उसी तरह वह भी बोल सके। हम यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य उच्चरित भाषा अपने परिवेश से स्वतः ही सीख लेता है। उच्चरित भाषा रूप को सीखने की यह प्रक्रिया अनायास (Unconciously) होती है। इसीलिए यह भी कहा जाता है कि मानव-शिशु को प्रारंभिक वर्षों में किसी भी भाषा परिवेश में रखा जाए, वह उसका बोलचाल का रूप सीख लेता है।

उच्चरित भाषा की एक प्रकृति और है कि उसके विविध रूप भाषा समाज में प्रचलित होते हैं। यदि आप ध्यान दें तो आप देख सकते हैं कि हिंदी भाषा के उच्चरित रूप में ही कितनी विविधताएँ हैं। हिंदी भाषा का एक बहुत बड़ा क्षेत्र बोलियों (Dialects) का है। हिंदी की बोलियों में हम ब्रज, अवधी, मैथिली, मगही आदि का नाम ले सकते हैं। इन बोलियों को बोलने वालों की हिन्दी का उच्चरित रूप एक दूसरे से भिन्न दिखाई देता है। इसका तात्पर्य यह है कि बोलियों का प्रभाव उच्चारण करते समय हिंदी पर भी पड़ता है। शायद इसीलिए हम लोगों को उनके उच्चारण के आधार पर पहचान लेते हैं कि वे किस प्रांत,क्षेत्र या नगर के रहने वाले हैं। इसी तरह हिंदी का उच्चरित रूप भारतीय भाषाओं के मिश्रण से भी निर्मित होता हुआ दिखाई देता है। आपने बंबइया हिंदी (जिसका प्रयोग हिंदी फिल्मों में खूब होता है), कलकतिया हिंदी, हैदराबादी हिंदी आदि भाषा रूपों का नाम सुना होगा। वास्तव में यह रूप क्रमशः मराठी, बांगला और तेलुगु के प्रभाव से उत्पन्न हिंदी के उच्चरित रूप हैं।

उच्चरित भाषा को परंपरागत रूप में एक और नाम भी दिया गया है - वाक् (Speech) । वाक् का तात्पर्य ही है - कहना। अपनी बात कहने के लिए मनुष्य के पास उच्चरित भाषा होती है। इसीलिए अनेक विद्वान यह भी मानते हैं कि मनुष्य का जन्म ही बोलने के लिए हुआ है। इस मान्यता को इस तथ्य से भी बल मिलता है कि हम किसी ऐसे समाज के अस्तित्व की कल्पना इस धरती पर नहीं कर सकते जिसमें वाक् न हो। हम यह भी कह सकते हैं कि जहाँ कहीं भी मानव समाज के समूह परस्पर एक दूसरे से जुड़ते हैं या जुड़ना चाहते हैं तो वे सम्प्रेषण के लिए भाषा के उच्चरित रूप का ही प्रयोग

करते हैं। शायद यही कारण है कि उच्चरित भाषा की प्रकृति में इस महत्वपूर्ण बात को देखते हुए कि उच्चरित भाषा का प्रयोग कर के ही भाषा समुदाय के सदस्य बनते हैं। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक ब्लूम फील्ड ने यह कहा कि भाषा से तात्पर्य केवल उच्चरित भाषा से ही है। वे मानते हैं कि लिखित भाषा कुछ दृश्य-संकेतों के रूप में 'भाषा' (उच्चरित भाषा) को अभिव्यक्त करने का एक तरीका है। आधुनिक भाषा वैज्ञानिक अध्ययनों का आधार बोल-चाल की भाषा को ही बनाया गया है। यह दृष्टिकोण मानता है कि मौखिक भाषा की तुलना में लिखित भाषा का स्थान गौण है।

## 2.3 लिखित भाषा की प्रकृति

उच्चरित भाषा की प्रकृति पर विचार करते हुए हमने देखा कि लिखित भाषा की तुलना में उच्चरित भाषा को अधिक महत्व दिया गया है क्योंकि इस भाषा को भाषा का प्रयोग करने वाला अपने परिवेश से स्वतः ही सीख लेता है। उच्चरित भाषा ही मनुष्य के समाजीकरण का आधार होती है लेकिन इससे लिखित भाषा का महत्व कम नहीं हो जाता। लिखित भाषा सर्जनात्मक साहित्य का माध्यम होती है। इसका प्रत्येक भाषाई समाज में अपना विशिष्ट स्थान होता है। हम यह भी कह सकते है कि मानव जीवन में भाषा के लेखन का आविष्कार सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है। मानव समाज में भाषा का लिखित रूप एक सांस्कृतिक उपलब्धि है। यह मानते हुए भी कि वाक् की तुलना में लेखन की उपलब्धि मानव समाज को काफी बाद में हुई है लेकिन मानव सभ्यता के विकास पर लेखन का गहरा प्रभाव होता है। हम सभी के लिए, जो साहित्यिक संस्कृति के बीच पले बढ़े हैं, एक ऐसे संसार की कल्पना कर पाना भी कठिन होगा जहाँ लेखन का अभाव हो। क्या आप और हम अपने इर्द-गिर्द ऐसे माहौल की कल्पना कर सकते हैं और उसमें संतुष्ट रह सकते हैं जिसमें न तो किताबें हो, न अखबार, न ही पत्र-चिट्ठियाँ, न वेतन चिट्ठा और न ही परिचय पत्र, जहाँ लेक्चर-नोट न हों, रास्तों के पते न हों, बैनर पोस्टर और विज्ञापन न हों और न हों डॉक्टर की पर्चियाँ, कर और बीमा पत्र। क्या हम ऐसी शिक्षापद्धति की कल्पना कर सकते हैं जिसमें इमला (Dictation) न हो, पाठ्य पुस्तकें तथा अभ्यास और निर्देश पुस्तिकाएँ न हों। आधुनिक समाज इनमें से किसी भी स्तर पर लेखन की शून्यता को बर्दाश्त नहीं कर सकता अर्थात हमारी आधुनिक सभ्यता लेखन के बीच ही जीती है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि लेखन ने ही सभ्यता को संभव बनाया लेकिन लेखन को कम महत्व देकर मात्र वाक् को ही महत्व देना भी गलत होगा। भाषा का लिखित रूप हमारी सभ्यता का परिणाम है। वह एक ऐसा उत्पाद है जिसे हमारी सभ्यता ने आकार दिया है और वह एक ऐसा औज़ार है जिसने मानव सभ्यता को निखारा है।

हमें यह जानना चाहिए कि लेखन का आविष्कार साहित्यिक प्रयोजन के लिए नहीं हुआ लेकिन इसने साहित्य को संभव बनाया। इसमें तो संदेह ही नहीं कि बोलचाल की भाषा की तुलना में लिखित भाषा अधिक व्यवस्थित और व्याकरणिक नियमों से बँधी हुई दिखाई देती है इसलिए लिखित भाषा उच्चरित भाषा की तुलना में अधिक मानक होती है। हमें यह भी जानना चाहिए कि लिखित भाषा ने सम्प्रेषण की अनेक जटिल क्रियाओं को भी संभव बनाया। ऐसी क्रियाएँ जिनका वाचिक परंपरा वाले समाज में अभाव था। भारतीय समाज में लिखित भाषा की इस उपलब्धि को मिथक और पौराणिक संदर्भों से भी जोड़ कर देखा गया। हम 'गणेश' को लिखित भाषा का आविष्कारक मानते हैं। ऐसी मान्यता है कि उन्होंने अपना एक दाँत तोड़ कर लेखनी की तरह इस्तेमाल किया। यह भी माना जाता है कि वेदव्यास ने मौखिक रूप से 'महाभारत' का उच्चारण किया और गणेश ने उसे लेखनीबद्ध किया। भारतीय सभ्यता में लेखन को दैवी शक्तियों से जोड़ा गया है। इसीलिए प्रारंभ में लेखन को सामान्य जन की क्षमता से बाहर रखा गया। इसका एक तार्किक कारण भी है। एक पूर्ण व्यवस्था के रूप में विकसित होने तक प्रारंभिक लिपियाँ अपनी प्रकृति में अधिक जटिल थीं। इस जटिलता के कारण लेखन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर पाना सामान्य व्यक्ति के लिए कठिन होता था, अतः इसका प्रचलन सीमित, सुविधा संपन्न वर्ग में ही था; विशेषकर पुजारियों और वेदज्ञों में। तब सामान्य जन के लिए लेखन एक रहस्य था, एक गुप्त कोड। इसके देवत्व के दो कारण दिखाई देते हैं :

1. अधिकतर लोगों के लिए इसे सीख पाना अत्यंत कठिन था इसलिए यह मान्यता बनी कि भाषा के लिखित रूप का निर्माण मनुष्य तो कर ही नहीं सकता, यह ईश्वर द्वारा ही प्रदत्त हो सकता है।
2. इसीलिए केवल या अधिकतर इसका प्रयोग वे ही कर सकते हैं जो ईश्वर के निकट हों, अर्थात पुजारी और वेदज्ञ। आज भी इस स्थिति को दूसरे रूप में परिणत होते हुए देखा जा सकता है। हम अपने आसपास अगर ध्यान से देखें तो यह पायेंगे कि जो लोग पढ़ना या लिखना नहीं

जानते वे समाज में अपने को कमजोर समझते हैं और समाज भी उन्हें कम सुविधाएँ देता है। अर्थात पढ़ने-लिखने में असमर्थ समूह पढ़े-लिखे समूह की तुलना में शक्तिविहीन होता है। पढ़ा-लिखा वर्ग इस शक्तिविहीन समूह का शोषण करने लगता है। विश्व के इतिहास में शोषण का यह पक्ष अनेक बार हमारे समाने आ चुका है। इस प्रकार लेखन सामाजिक नियंत्रण का भी एक शक्तिशाली औज़ार है।

## 2.4. उच्चरित और लिखित भाषा के भेद

पिछले कुछ सालों में लिखित भाषा और उच्चरित भाषा के भेदों तथा इन दोनों के परस्पर अन्तःसंबंधों पर काफी विचार हुआ है। जैसा कि पहले भी विचार किया गया, अध्ययनों में उच्चरित भाषा को अधिक महत्व दिया जाता रहा। समाज में दोनों का स्थान अपनी-अपनी दृष्टि से महत्व का है। इन दोनों के भाषिक रूपों को एक दूसरे से अलग करने वाले तत्वों को विद्वानों ने गंभीरता से देखा है। इन विचारों में इन दोनों की रूप संरचना को ले कर बात कही गई है। बोलचाल की भाषा या उच्चरित भाषा में ध्वन्यात्मक इकाइयों का प्रयोग किया जाता है जबकि लिखित भाषा में लेखिमीय (Graphemic) इकाइयों का प्रयोग किया जाता है। ध्वन्यात्मक इकाइयों का संबंध मनुष्य के उच्चारण अवयवों, उच्चारण प्रयत्न, मुख विवर (Oral cavity) में उच्चारण अवयवों के संचालन, वायु के दबाव और उतार-चढ़ाव के साथ जुड़ता है। बोलचाल की भाषा या वाक् (Speech) के उत्पादन में वायु फेफड़ों से निकलकर बाहर आती है। उस समय अलग-अलग उच्चारण स्थान उस वायु के निकलने में रुकावट उत्पन्न करते हैं, इनके आधार पर ही भाषा-विज्ञान में स्वर और व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण किया गया है। लिखित भाषा के अंतर्गत उच्चरित ध्वनियों का लिखित चिह्नों द्वारा अंकन किया जाता है। इस प्रकार उच्चरित ध्वनि प्रतीकों के लिए अलग-अलग लिपि चिह्न निर्धारित किये जाते हैं।

यह अंतर मूलभूत है। लिखित भाषा तथा बोलचाल की भाषा के अन्तरों का यदि बारीकी से अध्ययन करना हो तो किसी लिखित पाठ की तुलना अनौपचारिक बातचीत से की जा सकती है। इसके बड़े रोचक उदाहरण दिए जा सकते हैं। एक अध्यापक लिखे हुए पाठों या पुस्तकों के आधार पर कक्षा में अध्यापन करता है। लेकिन पाठ की लिखित भाषा और अध्यापक की मौखिक भाषा एकदम भिन्न हो जाती है। इसी तरह यदि आप किसी व्यक्ति का भाषण रेखांकित करें और फिर उसका लिप्यंकन करें तो आपको बहुत कठिनाई होगी। इसका कारण यही है कि बोलते समय भाषा की संरचना भिन्न होती है।

उच्चरित भाषा का प्रभाव लिखित भाषा में मिलता है। भाषा के विकास के समय उच्चरित रूप की प्रधानता रहती है जो लेखिम निर्धारण को प्रभावित करती है। इस संदर्भ में यदि हिंदी की बात करें तो पुनर्जागरण युग (भारतेन्दु युग) का साहित्य लेखन भाषा समुदाय द्वारा व्यवहृत मौखिक भाषा रूप पर ही निर्भर था। इतना ही नहीं लिखित भाषा को नियंत्रित निरूपित करने के लिए सामग्री (Corpus) और व्याकरण दोनों उच्चरित भाषा पर ही आधारित थे। मानकीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से उच्चरित भाषा के इस प्रभाव को द्विवेदी युग में दूर करने का कार्य किया गया। इस प्रकार हिंदी की वर्तनी और लिपि व्यवस्था को मानकीकृत करके, लिखित भाषा को मानकता प्रदान की गई। पुनर्जागरण युग के इस उच्चरित रूप के प्रभाव को कुछ उदाहरणों के माध्यम से देखा जा सकता है:

**वर्तनी के स्तर पर** - मुसल्मान (मुसलमान), कलजुग (कलयुग), तजरिबा (तुर्जुबा), मदरास (मद्रास), पहिरावा (पहनावा), सर्दार (सरदार), भाफ (भाप)

**उच्चरित क्रिया रूप** - कहाए (कहे गए), पूछैंगे (पूछेंगे), देख पड़ते हैं (जान पड़ते हैं, दिखाई पड़ते हैं), दिलाया चाहते हैं (दिलाना चाहते हैं)

**अन्य प्रयोग** - तिस पर भी (उस पर भी), पाषाण की नाईं (पाषाण की तरह), पलुए जीव-जंतु (पालतू जीव-जंतु), इस बेर (इस बार)

इस प्रकार लिखित और उच्चरित भाषा के संबंध में यह भी कहा जा सकता है कि बोलचाल की भाषा की एक खास तरह की संरचना होती है। लिखने में उच्चरित भाषा के रूपों का आना भिन्न सम्प्रेषणजन्य स्थिति उत्पन्न करते हैं। बोलचाल की भाषा या 'स्पीच' गतिशील, वैविध्यपूर्ण और अस्थायी होती है। उच्चरित भाषा रूप का कार्य है वक्ता श्रोता की उपस्थिति में वार्तालाप संपन्न करना। बोलते समय हमारे मन में श्रोता या श्रोतावर्ग विद्यमान रहता है। लिखित भाषा रूपों की प्रकृति इससे

भिन्न है, यह स्थिर, स्थायी और एकरूपी होती है। लिखित भाषारूपों को लिखने वाला व्यक्ति या लेखक अपने पाठक से दूर होता है। इसमें संदेह नहीं है कि लिखित और उच्चरित दोनों भाषा रूप मानव समाज के सम्प्रेषण व्यापार में अपनी अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। भाषा सम्प्रेषण व्यवस्था का एक अन्यतम उदाहरण है। सम्प्रेषण व्यवस्था के संदर्भ में यह कहा जा सकता है इसमें एक ओर वक्ता/लेखक (Addresser) होता है तो संदेश (Message) भेजता है और दूसरी तरफ श्रोता/पाठक (Addressee) रहता है जो इस संदेश को ग्रहण करता है। वक्ता और श्रोता के बीच संदेश के आदान-प्रदान को सम्प्रेषण की संज्ञा दी जाती है। ध्यान देने की बात है कि कथ्य रूप में अपने भाव, विचार या अनुभूति को संदेश का रूप देने के लिए वक्ता किसी कोड का सहारा लेता है। कथ्य को संदेश के रूप में बाँधने की प्रक्रिया को कोडीकरण (Encoding) कहा गया है। श्रोता भी संदेश के भाव को ग्रहण करने के लिए इसी कोड की सहायता लेता है। संदेश में निहित कथ्य को पाने की प्रक्रिया को विकोडीकरण (Decoding) कहा जाता है। लिखित और उच्चरित दोनों ही संदेशों में सम्प्रेषण की यह व्यवस्था कार्य करती है जिसमें छः उपादानों की आवश्यकता पड़ती है - 1. वक्ता, 2. श्रोता, 3. संदर्भ, 4. संदेश, 5. कोड, 6. सरणि

नीचे दी गई तालिका में इन विभिन्न उपादनों को उनके अन्तःसंबंधों के साथ दिखाया जा रहा है -

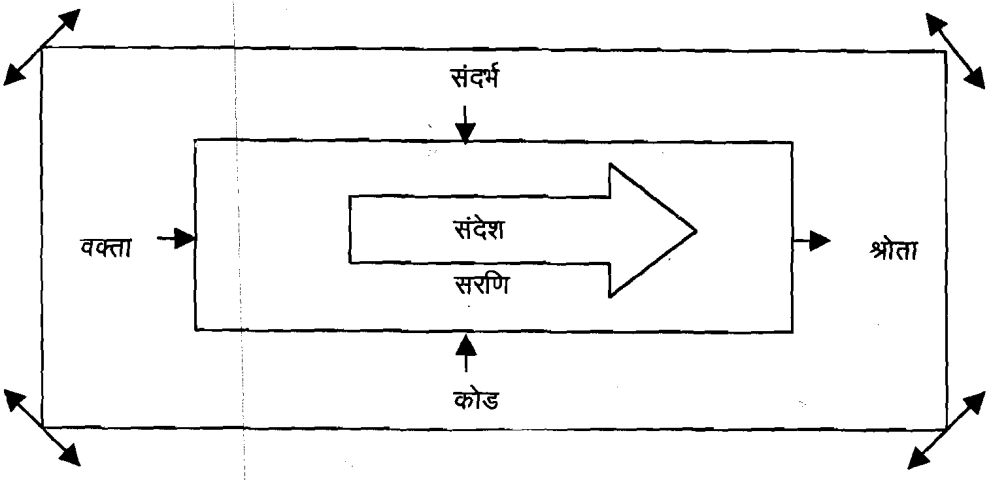


**बोध प्रश्न**

1. नीचे कुछ कथन दिए जा रहे हैं। जो कथन सही हैं उन पर (✓) तथा जो कथन गलत हैं, उनपर (x) का निशान लगाइए -
   - (i) लिखित भाषा, बोलचाल की भाषा की तुलना में अधिक प्राचीन है।
   - (ii) लिखित भाषा का अस्तित्व समाज के लिए अनिवार्य है।
   - (iii) लिखित और बोलचाल की भाषा की सम्प्रेषणपरक आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न होती हैं।
   - (iv) उच्चरित भाषारूप को सीखने की प्रक्रिया सायास होती है।
   - (v) बोलचाल की भाषा में लेखिमिय इकाइयों का प्रयोग किया जाता है।
   - (vi) मानव सभ्यता के विकास पर लेखन का गहरा प्रभाव होता है।
   - (vii) बोलचाल की भाषा देश सापेक्ष तथा लिखित भाषा काल सापेक्ष होती है।
   - (viii) उच्चरित भाषा अधिक मानक होती है।
   - (ix) सम्प्रेषण व्यवस्था में छः उपादानों की आवश्यकता पड़ती है।
   - (x) उच्चरित भाषा की संरचना में पूर्णता और क्रमबद्धता होती है।
   - (xi) लिखित भाषा, उच्चरित भाषा से ही जन्म लेती है।
   - (xii) लिखित भाषा का प्रयोग 'आत्मीयता' का द्योतक होता है।
   - (xiii) बोले गए शब्द अल्पजीवी होते हैं।
   - (xiv) शब्दों, पदबंधों तथा उपवाक्यों की प्रवृत्ति हमें लिखित भाषा में देखने को मिलती है।
   - (xv) लिखित शब्दों पर लोग अधिक विश्वास करते हैं।

## 2.5 उच्चरित और लिखित भाषा की विशेषताएँ

अभी हमने यह जाना कि लिखित भाषा अपनी प्रकृति में स्थायी होती है जबकि उच्चरित भाषा अस्थायी। स्थायी होने से हमारा तात्पर्य यही है कि जिस विषय पर भी कुछ लिख दिया जाता है वह

एक दस्तावेज (Document) बन जाता है। इस लिखित रूप को हम अनन्त काल तक सुरक्षित रख सकते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि लेखन सम्प्रेषण के क्षेत्र (Range) को व्यापक विस्तार दे देता है। यह विस्तार ही इसे शक्ति संपन्न बनाता है। हम बार-बार इसका वाचन कर सकते हैं। हजार-दो हजार साल पहले की लिखित सामग्री को हम सुरक्षित रख पाते हैं। इसके विपरीत वाक् सम्प्रेषण का क्षेत्र बहुत ही सीमित होता है। मौखिक सम्प्रेषण मात्र कान की सीमा तक ही हो सकता है। बिना किसी उपकरण के मानव स्वर बहुत दूर तक नहीं पहुँच सकता है जबकि लिखित संदेश भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण कर के दूर-दूर तक पहुँच सकता है।

लिखित भाषा वह भाषा व्यवस्था है जिसे सतर्कता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। लेखन एक सुविचारित पद्धति है इसीलिए इसकी संरचना अधिक सुगठित, मानकीकृत और एकरूपता लिए हुए होती है। इस प्रकार का संरचनागत गठन बोलचाल की भाषा में प्रायः नहीं होता है। यह भी ध्यान देने की बात है और इससे मौखिक और लिखित भाषा की विशेषताओं की तुलना संभव हो पाती है कि जब लिखित संदेश देना संभव हुआ तो संदेशवाहक की मध्यस्थता समाप्त होने लगी। मौखिक सम्प्रेषण पूर्णतः संदेशवाहक पर निर्भर था। मौखिक संदेश संदेशवाहक की सीमा के कारण थोड़ा बहुत बदल भी जाता था। अगर हम साहित्य की वाचिक परंपरा को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि मौखिक रूप से एक से दूसरे तक पहुँचते-पहुँचते साहित्यिक संदेश और उसकी संरचना में बहुत बदलाव आ जाता था। लिखित संदेश ऐसे संदेशवाहकों द्वारा हज़ारों मील तक पहुँचाया जा सकता है जो स्वयं नहीं जानते कि संदेश क्या है। उनके लिए लिखित संदेश की उस भाषा को जानना-समझना जरूरी नहीं है जिसमें वह लिखा गया है। पदबंधित लेखन (Phrased) किसी भी अन्य उस साधन की तरह है जो मानव की शक्ति का विस्तार करता है। लेखन के आविष्कारक ने अनेक सामाजिक जरूरतों की आपूर्ति को संभव बनाया। भाषिक व्यवहार की उसने नई दिशाएँ खोलीं और सामाजिक सम्प्रेषण तथा आर्थिक परिवर्तन में अपनी व्यापक भूमिका निभाई।

इसके अलावा लिखित भाषा की इकाइयाँ जैसे वाक्य, उपवाक्य, पदबंध, अनुच्छेद आदि विभिन्न विराम-चिह्नों और एक निश्चित विन्यास द्वारा स्पष्टता के साथ उल्लिखित रहती हैं। उधर बोलचाल की भाषा इतनी सहजता, स्वाभाविकता तथा तीव्रता से उत्पन्न होती है कि इस भाषा रूप में संरचनागत जैसी जटिलता तथा कसाव आना एक प्रकार से असंभव सा ही होता है। यही नहीं, कोई वक्ता बोलने से पहले जटिल संरचनाओं की पूर्व संकल्पना कर के भी बोलना चाहे तो भी वह इन जटिल संरचनाओं को लेखन में तो ला सकता है, बोलचाल की भाषा में यह संभव नहीं होता। लिखते समय तो व्यक्ति लंबे-लंबे वाक्यों में अपनी बात कह सकता है परंतु बोलते समय ऐसा कर पाना अनेक कारणों से संभव नहीं हो पाता। यही कारण है कि बोलचाल की भाषा में प्रायः शिथिल संरचनाएँ देखने को मिलती हैं।

इसके अलावा शब्दों तथा अनेक प्रकार के पदबंधों एवं उपवाक्यों की पुनरावृत्ति की प्रवृत्ति हमें बोलचाल की भाषा में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है। बोलचाल या मौखिक भाषा में बोलते-बोलते अधूरे पदों, पूरक वाक्य संरचनाओं, तकिया कलाम आदि का बीच-बीच में खूब प्रयोग दिखाई देता है। उदाहरणार्थ 'आप समझते हैं.....', 'मैंने कहा.....', 'आप जानते ही हैं .....', 'आप समझते हैं .....', 'माफ कीजिए.....', 'हमें सोचना है.....', 'समझे/आप समझते हैं .....', 'ठीक है....' आदि अनेक ऐसी ही संरचनाएँ हैं जिनको हिंदी भाषी वक्ता बोलचाल की भाषा में प्रयोग करते हैं।

यही नहीं संहिता, अनुतान, बलाघात, यति, चेष्टाओं, हाव-भाव प्रदर्शन, हाथ-पैर हिलाना, उँगलियों के तरह-तरह के संकेत आदि के माध्यम से वक्ता बोलचाल की भाषा को बोलते समय छोटे-छोटे उच्चारण खण्डों में विभक्त करता चलता है।

लिखित भाषा की संरचना में हमें हमेशा एक क्रमबद्धता दिखाई देती है। कर्ता, कर्म, क्रिया यथास्थान प्रयुक्त होते हैं परंतु बोलचाल की भाषा में आपको प्रायः यह क्रम विखंडित मिलेगा। लिखित भाषा में ऐसा प्रायः नहीं होगा कि विशेषण संज्ञा के बाद, क्रिया विशेषण क्रिया के बाद आएँ, परन्तु बोलचाल की भाषा में इस प्रकार का क्रम परिवर्तन भी खूब देखने को मिलता है। नीचे हम बोलचाल की भाषा का एक नमूना प्रस्तुत कर रहे हैं। यह एक चुनाव-अभियान के दौरान एक पार्टी के नेता द्वारा दिए गए भाषण से उद्धृत है। यहाँ इस भाषण के अंश को लिख कर वक्ता द्वारा प्रदर्शित हाव-भाव, चेष्टाओं, संहिता, बलाघात, अनुतान, हाथ-पैर हिलाना आदि को प्रदर्शित करना तो कठिन है, वह तो केवल भाषण को सुनते समय ही देखा जा सकता है। हाँ, यहाँ पर आप वाक्यांशों, शब्दों आदि की पुनरावृत्ति तथा क्रम परिवर्तन को देख सकते हैं :

**भाइयो, अंत में एक बात और चाहूँगा कहना आपसे। कहना क्या, बताना चाहूँगा, याद दिलाना चाहूँगा कि न भूलें आप इस बात को कि कितना कीमती है वोट आपका, बहुत कीमती है, जी हाँ बहुत और इस कीमती वोट की पहचानें आप कीमत। न जाने दें इसे जाया। आपका यह एक वोट, यह कीमती वोट, बदल देगा भविष्य इस देश का, देश की राजनीति का। केन्द्र में स्थायी सरकार ही न हुई तो सोचिए कहाँ जाएगा हमारा, आपका जी हाँ, आपका यह देश और आप जानते ही हैं कि स्थायी सरकार, कौन दे सकता है स्थायी सरकार। एक मात्र एक ही पार्टी। इसलिए मैं दरखास्त करता हूँ, हाथ जोड़ अपने सभी भाइयों से बहनों से कि अपना अमूल्य वोट देकर अपने इलाके के उम्मीदवार श्री..... को सफल बनाएँ।**

बोलचाल की भाषा की एक विशेषता यह भी होती है कि चूँकि यहाँ वक्ता और श्रोता परस्पर एक दूसरे के सम्मुख होते हैं, संप्रेष्य को संदर्भ से ही समझा जा सकता है। अनेक विषयों से संबंधित संदर्भ उनके मन में ही रहते हैं। उदाहरण के लिए -

**एक - कल चलेंगे। मैं टिकट लेता आऊँगा।**
**दो - ठीक है। कहाँ मिल रहे हो?**
**एक - वहीं उसी जगह।**
**दो - उसे भी साथ लाऊँ या नहीं?**
**एक - अरे नहीं, छोड़ो उसे।**

यहाँ उपर्युक्त वार्तालाप को सुनकर यह पता लगाया जाना मुश्किल है कि पहला व्यक्ति किस प्रकार की टिकट की बात कर रहा है - बस की, रेल की, सिनेमा की, नाटक की या किसी अन्य की। इसी प्रकार 'उसी जगह' से यह पता नहीं चल रहा है कि किस स्थान पर मिलना है और 'उसे साथ लाऊँ या नहीं' से यह आभास नहीं मिल रहा है कि किसे साथ लाने की बात पूछी गई है। वह कोई लड़का है या लड़की। कहने का तात्पर्य यही है कि बोलचाल की भाषा में संदर्भ (जो कि वक्ता तथा श्रोता के मन में स्पष्ट होता है) को बिना समझे बात को समझा नहीं जा सकता, परंतु लिखित भाषा में ऐसी स्थिति या इस प्रकार की स्थिति बिना संदर्भ स्पष्ट किए नहीं प्रस्तुत की जा सकती। उसका कारण यही है कि लिखित भाषा में प्रतिभागी परस्पर एक दूसरे के सम्मुख नहीं होते, अतः संप्रेष्य को समझने के लिए संदर्भ पर निर्भर पर रहना पड़ता है। इसीलिए यहाँ ऐसे शब्दों को नहीं रखा जाता जहाँ कि अर्थ को संदर्भ के सहारे निकालना या समझना पड़े। कहने का तात्पर्य यही है कि लिखित भाषा में इस प्रकार की उक्तियाँ जैसे - इसे, उसे, यह चीज, वह चीज, यहाँ पर, वहाँ पर, बिना उनके संदर्भ को स्पष्ट किए प्रयोग में नहीं लाई जा सकतीं।

बोलचाल की भाषा तो परस्पर आदान-प्रदान है। यहाँ बोधन के अंतराल को तुरंत स्पष्ट कर लिया जाता है। परंतु लेखन में तो लेखक को ही इस अंतराल के विषय में पूर्व संभावना कर के ही चलना पड़ता है क्योंकि लिखित रूपों को जब पढ़ा जाता है और समझा जाता है तब विभिन्न पाठक अपने-अपने ढंग से उसकी व्याख्या करते हुए पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए संस्कृत में एक युग ऐसा रहा है जहाँ पाठावली या मूल पाठ की अलग-अलग आचार्यों द्वारा अपने-अपने ढंग से अलग-अलग व्याख्याएँ या टीकाएँ की गईं और नए-नए सिद्धांत स्थापित किए गए। उदाहरण के लिए नाट्य शास्त्र की व्याख्या ही थी जो भट्ट तोत, लोल्लट, शंकुक और अभिनव गुप्त द्वारा आगामी युग में की गई। प्रत्येक आचार्य की ये व्याख्याएँ अलग-अलग दार्शनिक पृष्ठभूमि का आधार लिए रहने के कारण नए-नए सिद्धांतों के रूप में सामने आईं। यही स्थिति हमें अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद तथा द्वैताद्वैतवाद के सिद्धान्तों में दिखाई देती है जहाँ कि एक ही सूत्र की व्याख्या शंकर, रामानुज, वल्लभ तथा मध्व द्वारा अलग-अलग दार्शनिक पृष्ठभूमि में की गई।

चूँकि लेखन में मौखिक भाषा की भाँति तुरंत प्रबलन का अवकाश नहीं रहता, लिखित भाषा में असंदिग्धता तथा अनेकार्थता के लिए अवकाश बना रहता है। लेखकों से यही अपेक्षा की जाती है कि वे इन गुणों से अपने लेखन को जहाँ तक बचा सकें, बचाएँ। मौखिक वार्तालाप में यदि कोई शब्द या संरचना इस प्रकार की आती है जो असंदिग्ध हो या अनेकार्थी हो तो श्रोता संदर्भ से उसका अर्थ ग्रहण कर लेता है और फिर भी कहीं संदेह रह जाता है तो पुनः वक्ता से पूछ कर स्पष्ट करता चलता है, परंतु लिखित भाषा रूप में श्रोता जैसी स्थिति नहीं होती अतः वहाँ इस प्रकार की अभिव्यक्तियों को लेखन में न आने देने का उत्तरदायित्व लेखक पर ही आ जाता है।

लिखित भाषा में विविध प्रकार के कतिपय विशिष्ट अभिलक्षण पाए जाते हैं जो मौखिक भाषा में नहीं दिखाई देते। उदाहरण के लिए विराम चिह्न, विविध प्रकार की लेखिमीय आकृतियाँ, तरह-तरह के रंगों का प्रयोग आदि ऐसी युक्तियाँ हैं जिनका प्रयोग लेखन को व्यवस्थित और आकर्षक बनाता है। बोलचाल में तो केवल खंडेतर अभिलक्षणों जैसे सुर, तान, लय, बलाघात, संहिता आदि को ही आधार बनाया जा सकता है और कतिपय लेखिमीय युक्तियों को इन्हीं के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण के लिए प्रश्न और आश्चर्य को जहाँ लिखित भाषा में प्रश्न वाचक (?) तथा आश्चर्यसूचक (!) चिह्न द्वारा प्रदर्शित किया जाता है वहाँ उच्चरित भाषा में इन्हें क्रमशः उदात्त, अनुतान तथा उच्चारण में तेजी लाकर ही व्यक्त किया जा सकता है।

इसी प्रकार जब कोई विशिष्ट बात कहनी होती है या किसी विशिष्ट बात पर किसी का ध्यान आकर्षित करना होता है तो लेखन में प्रायः उस वाक्य को रेखांकित कर दिया जाता है जबकि मौखिक भाषा में तो इसे आवाज में तेजी लाकर ही व्यक्त किया जाता है। इसी प्रकार लेखन में कम महत्व की बात को कोष्ठक में रख कर समझाई जाती है वह बोलचाल में धीमी आवाज़ में और धीमे स्वर के साथ यदा-कदा कही जा सकती है। परंतु सच तो यही है कि लेखन में प्रयुक्त इन सभी युक्तियों के लिए बोलचाल की भाषा में कोई समतुल्य युक्ति नहीं है। इसी का परिणाम यह होता है कि लिखित भाषा में प्रयुक्त ऐसे अनेक रूप हैं जिनकी संरचना को बोलकर या पढ़कर संप्रेषित नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए अनेक प्रकार की तालिकाएँ, समय सारणियाँ, ग्राफ पर प्रदर्शित सूचनाएँ, विज्ञान और गणित के अनेक सूत्र, मानचित्रों में दिखाए गए अनेक प्रकार के संकेत जैसे नदी, समुद्र, पर्वत, देशों की सीमा रेखाएँ, अक्षांश और देशांतर को प्रदर्शित करने वाले रेखीय संकेत आदि सभी कुछ लेखन में प्रयुक्त होने वाली वे युक्तियाँ हैं जिनको लिखकर तो संप्रेषित किया जा सकता है, परंतु बोलकर नहीं।

इसी प्रकार की स्थिति के एकदम विपरीत मौखिक भाषा में भी हमें अनेक ऐसी युक्तियाँ दिखाई देती हैं जिनको लेखन में अभिव्यक्ति कर पाना कठिन ही नहीं असंभव भी है। उदाहरण के लिए बोलते समय तरह-तरह की क्रियाएँ करना जैसे चलना, बैठना, दौड़ना, गिरना, फिसलना आदि या हाव-भाव तथा तरह-तरह की अन्य चेष्टाओं का प्रदर्शन तथा भावों एवं अनुभावों का प्रदर्शन जैसे रोना, हँसना, घृणा करना, क्रोध करना, मुस्कराना, आँसू आना आदि को मौखिक भाषा में तो सहजता से अभिव्यक्त किया जा सकता है परंतु लेखन में इनको अभिव्यक्त करने का कोई साधन नहीं है। नाटक एकांकियों में जहाँ लेखक इन चेष्टाओं, भावों और कार्यकलापों को करते हुए अपने पात्रों को दिखाना चाहता है वहाँ नाटक/एकांकी के लिखित रूप में कोष्ठक में इस प्रकार के संकेत देता हुआ चलता है - रोते हुए, हँसते हुए, गुस्सा करते हुए, दौड़ते हुए, चलते हुए, बच्चे को गोद में लेते हुए, चलते हुए आदि।

जहाँ तक लिखित भाषा और बोलचाल की भाषा के शब्दकोश तथा व्याकरण का प्रश्न है, इन दोनों में भी हमें पर्याप्त भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। प्रत्येक भाषा में कुछ संरचनाएँ ऐसी मिलती हैं जिनका प्रयोग केवल लिखित भाषा में तो संभव है, मौखिक में नहीं। हिंदी में भी अनेक उपवाक्यों से मिलकर बने जटिल संयुक्त वाक्य लेखन में तो देखे जा सकते हैं पर बोलचाल की भाषा में इनका प्रयोग नहीं के बराबर होता है। इसी प्रकार अकर्तृवाच्य की अनेक संरचनाएँ ऐसी हैं जिनका प्रयोग लेखन में तो संभव है पर बोलचाल में उनका प्रयोग सामान्यतः हिन्दी भाषाभाषी नहीं करता। उदाहरण के लिए नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

1. **माँ के द्वारा नौकरानी से बच्चे को दूध पिलवाया गया।**
2. **राम के द्वारा इस चारपाई पर सोया जाता है।**
3. **छात्रों को अध्यापक द्वारा निबंध लिखवाया जाएगा।**

ऊपर दिए गए तीनों वाक्य अकर्तृवाच्य के हैं। व्याकरण की पुस्तकों में तो आप इस प्रकार के वाक्यों को देख सकते हैं परंतु सामान्य बोलचाल में कोई भी इन वाक्यों का प्रयोग नहीं करेगा। सामान्यतः यही बात नीचे दिए गए वाक्यों के रूप में कही जाएगी :

1. **माँ ने नौकरानी से बच्चे को दूध पिलवाया।**
2. **राम इस चारपाई पर सोता है।**
3. **अध्यापक छात्रों को निबंध लिखवाएगा।**

भाषा द्वैत की स्थितियों में पाए जाने वाले उच्च कोड तथा निम्न कोड की स्थिति भी इसी का उदाहरण है। जहाँ पूरे एक कोड का प्रयोग केवल लेखन मे होता है और दूसरे कोड का प्रयोग केवल उच्चरित भाषा में।

शब्दावली के क्षेत्र में भी यदि हम देखें तो भाषाओं में हमें अनेक शब्द ऐसे मिलेंगे जिनका प्रयोग लिखित भाषा में तो होता है परंतु बोलचाल की भाषा में बिलकुल नहीं होता। उदाहरण के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली को ही लीजिए। विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का प्रयोग लेखन में तो आपको मिलेगा पर बोलचाल में प्रायः लोग इन शब्दों का प्रयोग नहीं करते। उदाहरण के लिए आप किसी भी इंजीनियर के कार्यालय पर लगे बोर्ड पर ध्यान दीजिए वहाँ लेखन में इंजीनियर के लिए 'अभियंता' शब्द का प्रयोग हुआ होगा। कितने हिंदी भाषी बोलचाल की भाषा में अभियंता शब्द का प्रयोग करते हैं?

हिंदी की स्थिति तो इस संदर्भ में और भी थोड़ी सी विचित्र है। विभिन्न प्रयुक्तियों जैसे कार्यालयीन हिंदी, बैंकिंग हिंदी, आयुर्विज्ञान संबंधी हिंदी आदि में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली पर ध्यान दीजिए। हिंदी में इन क्षेत्रों से संबंधित जो तकनीकी शब्द निर्मित किये गए हैं उनमें एक प्रकार से अंग्रेजी भाषा से अनुवाद ही किया गया है। जहाँ सीधा अनुवाद नहीं है वहाँ विचार तो विदेशी ही रहा है और संस्कृत के उपसर्ग और प्रत्ययों की मदद से नए-नए शब्द निर्मित कर लिए गए हैं। अतः हिंदी भाषी वक्ता सामान्य बोलचाल में अंग्रेजी के मूल शब्दों का ही प्रयोग करता है, हिंदी के नवनिर्मित शब्दों का नहीं। हाँ, यदि कभी कुछ लिखना हो, अनुवाद करना हो तब शब्दकोश की मदद लेकर इन शब्दों का प्रयोग मात्र लेखन में कर दिया जाता है।

इस स्थिति के विपरीत भी हमें भाषाओं में ऐसी स्थिति देखने को मिलती जहाँ ऐसी संरचनाएँ और शब्दावली प्राप्त होती है जिनका प्रयोग बोलचाल की भाषा में तो मिलता है परंतु लिखित भाषा में नहीं मिलता, उदाहरण के लिए प्रत्येक भाषा में आपको तरह-तरह की गालियाँ, स्लैंग तथा वर्जित (टैबू) शब्द आदि मिलेंगे। बोलचाल की भाषा में इनका प्रयोग आपको प्रत्येक भाषा में मिलेगा पर लेखन में सामान्यतः लेखक इनको प्रयुक्त नहीं करता या करता भी है तो केवल उस शब्द का पहला अक्षर लिखकर आगे दो-दीन डॉट लगा कर थोड़ा खाली स्थान छोड़ देता है। इन संरचनाओं तथा शब्दों में कुछ तो ऐसे होते हैं जो समाज में बहुत अधिक प्रयुक्त होते रहने के कारण रूढ़ हो जाते हैं। लोग इनका प्रयोग आम बोलचाल में बिना उनके अर्थ पर ध्यान दिए ही करते हैं। उदाहरण के लिए हिंदी में साला तथा माँ-बहन की गाली के शब्द आदि। ऐसे रूढ़ शब्दों का प्रयोग तो कभी-कभी लेखक लेखन में भी कर देते हैं परंतु अन्य गालियों और टैबू शब्दों का प्रयोग लेखन में तो त्याज्य ही माना जाता है। यही कारण है कि प्रायः यह कहा जाता है कि किसी के साथ मौखिक लड़ाई हो रही हो भले ही दस गालियाँ सुना दो, पर कागज की लड़ाई में भाषा संयत और संतुलित ही होनी चाहिए।

बोलचाल की भाषा की तुलना में लिखित भाषा अधिक जटिल, विविधतापूर्ण, रूढ़ तथा औपचारिक होती है। लिखित भाषा में ही हमें अनेक प्रयुक्तिपरक रूप दिखाई देते हैं। मौखिक भाषा की तुलना में यह अधिक संशोधित भाषायी रूप है। बोलचाल की भाषा में तो जो मुँह से निकल गया वही अंतिम होता है परंतु लेखन में तो लेखक अपने लेख को बार-बार पढ़ कर बार-बार संशोधित कर सकता है।

मौखिक भाषा की तुलना में लिखित भाषा अधिक मानक भी होती है। सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में मानकीकरण की प्रक्रिया का संबंध भाषा के लिखित रूप से ही होता है, मौखिक से नहीं।

लिखित भाषा में प्रायः रूढ़ अभिव्यक्तियों का ही प्रयोग किया जाता है, प्रत्येक भाषायी समाज में विभिन्न संदर्भों में विभिन्न संरचनाएँ रूढ़ हो जाती हैं। वहाँ न तो उसका प्रयोक्ता ही प्रधान होता है, और न ही वह व्यक्ति जिसके लिए वे संरचनाएँ प्रयुक्त की गई हैं। केवल उस विशिष्ट संदर्भ की माँग को देखते हुए उन रूढ़ संरचनाओं का प्रयोग उस भाषा में किया जाता है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति किसी को शादी, विवाह, जन्मदिन या इसी प्रकार के किसी अनुष्ठान के लिए आमंत्रित करता है या कोई संस्था किसी व्यक्ति को किसी संगोष्ठी, सेमीनार आदि का जब निमंत्रण देती है तो उस पत्र की भाषा में औपचारिकता तो बरती जाती है साथ ही उसमें जो वाक्य संरचनाएँ या पदबंध आते हैं वे प्रायः रूढ़ होते हैं। यदि विवाह संबंधी निमंत्रण पत्रों की लिखित भाषा पर आप ध्यान दें तो पता चलेगा कि सभी में गिने-चुने एक जैसे रूढ़ वाक्यों का ही प्रयोग दिखाई देता है। उदाहरण के लिए अधिकांश निमंत्रण पत्रों का प्रारूप एवं भाषिक संरचनाएँ प्रायः इस प्रकार की मिलती हैं -

**आयुष्मान---------- (लड़के का नाम)**
**आत्मज श्री ---------- एवं श्रीमती ---------- (माता-पिता का नाम)**
**एवं आयुष्मती ---------- (लड़की का नाम)**
**आत्मजा श्रीमती ---------- एवं श्री ---------- (माता-पिता का नाम)**
**का शुभ विवाह दिनांक ---------- को होना निश्चित हुआ है। आपसे अनुरोध है कि इस पावन-बेला पर पधार कर वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान करें।**

अथवा हो सकता है कि किसी निमंत्रण पत्र में 'पावन बेला' के स्थान पर 'शुभ अवसर' लिखा हो और आशीर्वाद प्रदान करने के स्थान पर 'कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएँ' जैसी रूढ़ उक्तियाँ हों।

इसी प्रकार समाज में अनेक ऐसे कार्यकलाप, अवसर एवं कार्यक्रम होते रहते हैं जब औपचारिकता का निर्वाह लिखित भाषा के माध्यम से ही संभव हो पाता है। किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद प्रायः उस व्यक्ति के परिचितों, मित्रों एवं सहकर्मियों द्वारा शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने की औपचारिकता का निर्बाह इस प्रकार के वाक्यों को लिखकर किया जाता है -

**श्री ---------- के आकस्मिक निधन के अवसर पर ---------- के सभी सदस्य हार्दिक शोक एवं समवेदना व्यक्त करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह शोक संतप्त परिवार को सांत्वना प्रदान करे।**

लेकिन जब कोई किसी के यहाँ गमी में जाता है तब बोलचाल में कभी भी इस प्रकार की औपचारिक और रूढ़ भाषा का प्रयोग नहीं करता। यही कारण है कि डाक-तार विभाग द्वारा विभिन्न आयोजनों जैसे पुत्र-जन्म, जन्म-दिवस, विवाह, पदोन्नति, पद-प्राप्ति, मृत्यु आदि के लिए कतिपय रूढ़ उक्तियाँ तैयार रहती हैं और व्यक्ति तार करते समय पूरा कथन भी नहीं लिखता, केवल उक्ति की संख्या लिख देता है और दूसरे शहर के तारघर से प्राप्त सूचना के आधार पर पुनः उस संख्या वाली उक्ति को लिखकर निर्देशित पते पर भिजवा दिया जाता है।

इसी प्रकार प्रत्येक समाज में अनेक प्रकार की ऐसी गतिविधियाँ हैं जिनको औपचारिकता का दर्जा तभी प्राप्त होता है जब उसमें लिखित अनुबंध तैयार किए जाते हैं। उदाहरण के लिए विवाह में पंडित जी वर तथा वधू से मौखिक रूप से भले ही जितने वचन भरवाएँ, परंतु यदि विवाह को कानूनी रूप देना है तब तो कचहरी में जाकर न्यायाधीश के समक्ष लिखित अनुबंध पर वर-वधू को हस्ताक्षर करने ही होंगे। इसी तरह से यदि मकान खरीदना या बेचना है या किराए पर लेना या उठाना है तो मौखिक रूप से भले ही कोई कितने ही आश्वासन क्यों न दे, औपचारिकता तो तभी आती है जब लिखित दस्तावेजों पर दोनों ही पक्ष के लोग हस्ताक्षर करते हैं और क्या आपने कभी इन इकरारनामों की भाषा देखी है? कभी आपको बैंक से या किसी अन्य सरकारी संस्था से ऋण लेना हो तो आपको इकरारनामे पर हस्ताक्षर करने होते हैं। लोग हस्ताक्षर भी करते हैं, पर वे उनकी भाषा नहीं पढ़ते। कारण यही है कि वह भाषा इतनी औपचारिक, तकनीकी, जटिल तथा दुरूह होती है कि सामान्य व्यक्ति की समझ से बाहर होती है। यद्यपि ऋण लेने से पूर्व अधिकारी उन सभी नियमों की चर्चा मौखिक रूप से कर देते हैं परंतु उस समय की मौखिक भाषा और इकरारनामे में नियमों को स्पष्ट करने वाली लिखित भाषा का अंतर वस्तुतः लिखित भाषा की औपचारिक विशेषता के कारण ही आता है।

**बोध प्रश्न**

2. प्रत्येक प्रश्न के दो या दो से अधिक उत्तर दिए जा रहे हैं। सही उत्तर पर निशान लगाइए -

(i) सुर, तान, लय, बलाघात आदि
   - (क) बोलचाल की भाषा में पाए जाते हैं।
   - (ख) लिखित भाषा में पाए जाते हैं।
   - (ग) दोनों में पाए जाते हैं।
   - (घ) किसी में नहीं पाए जाते।

(ii) उच्चरित भाषा
   - (क) समाजीकरण का आधार होती है।
   - (ख) लेखन का आधार होती है।

(iii) संरचनात्मक भाषा विज्ञान में
   - (क) मौखिक भाषा को गौण तथा लिखित भाषा को प्रमुख माना गया है।
   - (ख) लिखित भाषा को गौण तथा मौखिक भाषा को प्रमुख माना गया है।
   - (ग) दोनों को प्रमुख माना है।
   - (घ) दोनों को गौण माना गया है।

(iv) प्रारंभ में लेखन को
   - (क) वाचिक परंपरा से जोड़ा गया।
   - (ख) दैवी शक्तियों से जोड़ा गया।
   - (ग) सामान्य जन से जोड़ा गया।

(v) 'भाषाद्वैत' की स्थिति में लिखित भाषा में
   (क) केवल निम्न कोड का प्रयोग किया जाता है।
   (ख) केवल उच्च कोड का प्रयोग किया जाता है।
   (ग) दोनों कोडों का प्रयोग किया जाता है।

(vi) ऐतिहासिक विकास क्रम में लिखित भाषा का विकास बोलचाल की भाषा के
   (क) पहले हुआ है।
   (ख) बाद में हुआ है।
   (ग) साथ-साथ हुआ है।

## 2.6 उच्चरित भाषा के प्रकार्य

सामाजिक सम्प्रेषण की दृष्टि से भाषा का उच्चरित रूप अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। प्रसिद्ध आधुनिक भाषा वैज्ञानिक सस्यूर के बाद से पिछले कुछ सालों तक भाषा अध्येताओं ने केवल उच्चरित भाषा पर ही बल एवं ध्यान दिया। बोलचाल की भाषा, वाक् या उच्चरित भाषा को महत्व देने के पीछे उसके प्रकार्य ही प्रमुख कारण रहे हैं। मानव के सम्प्रेषण-व्यापार में उच्चरित भाषा ही मूलभूत भाषा रूप होती है। किसी भी भाषा-समाज में भाषा बोलने वालों की संख्या भाषा लिखने या पढ़ने वालों की तुलना में कहीं अधिक होती है। अतः यह भी कहा जा सकता है कि उच्चरित भाषा रूप का भौगोलिक क्षेत्र विस्तीर्ण होता है और इसके विविध रूप भाषा-समाज में व्यवहृत मिलते हैं। आज हिंदी भाषा को ही अगर देखें तो वह पूरे भारत में अलग-अलग तरह से बोली जाती है। अपनी अधीनस्थ बोलियों के बीच या बोली-क्षेत्र में उसका 'क्षेत्रीय रूप' प्रचलित है, भारतीय भाषाओं के बीच उसका 'संपर्क भाषा' के रूप में मिश्रित रूप प्रचलित है जैसे बंबइया हिंदी, कलकतिया हिंदी, हैदराबादी हिंदी आदि। इसके साथ ही उसकी सामाजिक शैलियाँ भी प्रचलित हैं जो वर्ग भेद, पद भेद, शिक्षा भेद या कहें सामाजिक स्तर भेद के कारण उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार उच्चरित भाषा के अनेक रूप समाज में प्रयुक्त मिलते हैं जिनके माध्यम से भाषा समुदाय के सदस्य अपनी सम्प्रेषणपरक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी क्षेत्र विशेष के किसी सामाजिक वर्ग की बोली ही कुछ कारणों से सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित कर के 'मानक' के रूप में स्वीकृत हो जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि 'उच्चरित भाषा' ही 'भाषा' का आधार होती है अथवा उच्चरित भाषा से ही 'भाषा का आदर्श रूप' विकसित होता है। मानक भाषा (लिखित भाषा) में उच्चरित भाषा की अपेक्षा भाषा वैविध्य कम मिलता है, उसमें क्रमशः विकल्पन (variation) की प्रवृत्ति कम होने लगती है। उच्चरित भाषा के समाज में कितने रूप भिन्न-भिन्न सामाजिक प्रकार्यों की पूर्ति करते हैं, यह बात इस चित्र से स्पष्ट हो जाएगी -

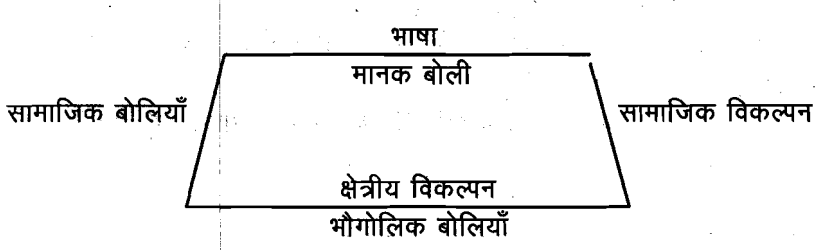


इस प्रकार उच्चरित भाषा समाज में अनेक प्रकार्य निभाती है और उसके रूप भिन्न होते हैं। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि उच्चरित भाषा में जो विकल्पन या भेद दिखाई देता है उसका कारण 'प्रयोक्ता' होता है। प्रयोक्ता के भौगोलिक क्षेत्र, शैक्षिक स्तरभेद तथा उसके सांस्कृतिक भेद का प्रभाव भाषा के उच्चरित रूप पर पड़ता है। उच्चरित भाषा के इस व्यापक प्रकार्य और विस्तार को देखते हुए ही विद्वानों ने मनुष्य को 'बोलनेवाला' और 'बातचीत करने वाला' प्राणी कहा है। अनेक भाषा वैज्ञानिक तो यहाँ तक मानते हैं कि मनुष्य का जन्म ही बोलने के लिए हुआ है। इस मान्यता को इस तथ्य से भी बल मिलता है कि ऐसे किसी मानव-समाज का अस्तित्व इस भूमंडल पर नहीं है जिसमें 'वाक्' न हो।

अपने प्रकार्य और विस्तार के कारण ही उच्चरित भाषा रूप सरलीकरण, कोड-मिश्रण और तद्भवीकरण को अपनाता है। आपने देखा होगा कि लिखित हिंदी में अंग्रेजी के शब्दों का खूब प्रयोग हो रहा है। उच्चरित भाषा में इनका प्रयोग अधिकतर ध्वन्यात्मक परिवर्तन के साथ ही दिखाई देता है, जैसे - टीसन (स्टेशन), भोट (वोट), अनवरसिटी (यूनिवर्सिटी), इंजीनर (इंजीनियर), डागदर (डॉक्टर), पिंसिन (पेंशन) आदि। इसी तरह उच्चरित हिंदी में संस्कृत के तत्सम शब्दों की जगह तद्भव शब्द या किसी

सरल-प्रचलित रूप को अपनाया जाता है जबकि लिखित हिंदी तत्सम शब्द को ही प्राथमिकता देती है, जैसे हेतु (के लिए), चुंबन (चुम्मा), क्षुब्ध (गुस्सा), सर्वश्रेष्ठ (सबसे अच्छा) आदि।

उच्चरित भाषा प्रकार्य के साथ अंग-विक्षेप (body language), भंगिमाओं और चेष्टाओं की भी सहायक भूमिका होती है। बोलते समय हम अपनी हथेली और उंगलियों का कितना प्रयोग करते हैं। इसी तरह चेहरे के हाव-भाव का भी हम बोलते समय सहयोग लेते हैं - सहमति-असहमति में सिर हिलाना, भौं चढ़ाना (आश्चर्य और क्रोध व्यक्त करने के लिए), आँखों का तरह-तरह से उपयोग (आश्चर्य, क्रोध, प्रेम, शरारत), होंठ सिकोड़ना आदि अनेक चेष्टाएँ हैं जिनका सहयोजन बोलते समय वक्ता करता है।

इस प्रकार उच्चरित भाषा हमारे जीवन का अंग होती है। वह भाषा-समाज को जोड़ने का काम करती है। इसके माध्यम से विभिन्न समूहों और वर्गों के लोग परस्पर विचार-विनमय करते हैं। हम उच्चरित भाषा के व्यापक सामाजिक व्यवहार और उसकी सामाजिक उपादेयता के आधार पर निम्नलिखित लक्षण निर्धारित कर सकते हैं -

1. उच्चरित भाषा एक वैकल्पिक यथार्थ है, भाषा समाज का प्रत्येक व्यक्ति इसका प्रयोग करता है।
2. भाषा-प्रकार्य और प्रयोग-क्षेत्र के विस्तार के कारण उच्चरित भाषा विषमरूपी होती है।
3. उच्चरित भाषा से ही लिखित भाषा जन्म लेती है।
4. उच्चरित भाषा में कोड-मिश्रण की प्रक्रिया स्वाभाविक होती है।
5. उच्चरित भाषा समाज में प्रतिष्ठा का कारण नहीं बनती, प्रतिष्ठा लिखित भाषा को ही मिलती है।
6. उच्चरित भाषा का प्रयोग 'आत्मीयता' का द्योतक होता है।
7. उच्चरित भाषा का प्रयोग अनौपचारिक संदर्भों में होता है।
8. उच्चरित भाषा में विकल्पन लिखित भाषा की तुलना में अधिक होता है।
9. उच्चरित भाषा को व्यक्ति अपने परिवेश से स्वतः सीखता है।
10. उच्चरित भाषा ही व्यक्ति के समाजीकरण का माध्यम होती है।

**बोध प्रश्न**

3. नीचे दिए वाक्यों के खाली स्थानों को कोष्ठक से उपयुक्त शब्द चुन कर भरिए -
   (i) मौखिक भाषा की तुलना में लिखित भाषा अधिक ———— होती है। (सरल, मानक, अस्थिर)
   (ii) निमंत्रण पत्रों की भाषा में ———— संरचनाओं का प्रयोग किया जाता है। (औपचारिक, मानक, रूढ़)
   (iii) लिखित भाषा कुछ ———— के रूप में उच्चरित भाषा को अभिव्यक्त करती है। (ध्वनि चिह्नों, दृश्य संकेतों, वाक्)
   (iv) ध्वन्यात्मक इकाइयों का संबंध ———— से होता है। (उच्चारण अवयव, लेखिमिक, श्वास नलिका)
   (v) ———— शब्दों का ज्ञान प्रायः लिखित भाषा के माध्यम से होता है। (आगत, रूढ़, परंपरागत)

## 2.7 लिखित भाषा के प्रकार्य

अभी हमने देखा कि लेखन का सर्वाधिक प्रत्यक्ष प्रकार्य यह है कि वह सम्प्रेषण के क्षेत्र को व्यापक विस्तार देता है। मानव सम्प्रेषण में लेखन के कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रकार्य भी हैं जिनका संक्षिप्त परिचय हम यहाँ प्राप्त करेंगे -

1. **स्मृति में सहायक (memory supportive) :** संस्कृति अध्येताओं और नृतत्वशास्त्रियों ने वाचिक परंपरा से जुड़े लोगों की स्मरण शक्ति को अत्यंत आश्चर्य से देखा और उसे महान सिद्ध किया। उनका यह कहना है कि वाचिक परंपरा से जुड़ हुए लोगों में यह क्षमता थी कि वे लंबे आख्यानों/महाकाव्यों को याद कर लेते थे। यह बात वास्तव में महत्वपूर्ण है लेकिन इतनी नहीं जितनी कि किसी विश्वविद्यालय की पुस्तक सूची। यही कारण है कि लेखन के विकास में उसका स्मृति प्रकार्य सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। यहाँ-वहाँ कब क्या हुआ इसे हम कुछ समय तक ही

याद रख सकते हैं। यदि अतीत की इन सूचनाओं को मौखिक रूप में कुछ पीढ़ियों तक हस्तांतरित करना हो तो पूरे संदेश में निरंतर परिवर्तन आता जाएगा। इसके विपरीत यदि इन सूचनाओं और संदेशों को लिखित रूप में रखा जाए तो इन्हें कभी भी उनके मूल अथवा अपरिवर्तित रूप में देखा जा सकता है अर्थात इन्हें हमेशा के लिएं यथावत सुरक्षित रखा जा सकता है।

2. **सम्प्रेषण क्षेत्र का विस्तार (Expansion of communicative area) :** मौखिक सम्प्रेषण में वक्ता और श्रोता दोनों की उपस्थिति अनिवार्य है इसलिए इसका सम्प्रेषण क्षेत्र सीमित होता है। इसके विपरीत लिखित सम्प्रेषण दूरी और काल दोनों की सीमा को पार कर लेता है। इसीलिए लेखन को सम्प्रेषण के क्षेत्र में दूरी का माध्यम कहा गया है जिसमें न केवल लेखक और पाठक की दूरी मिट जाती है बल्कि लेखक और संदेश की दूरी भी सिमट जाती है। इस प्रकार लिखित भाषारूप व्यापक सम्प्रेषण क्षेत्र तक अपने मूल रूप में फैल सकता है।

3. **प्रसारण का माध्यम (Mode of transmission) :** लेखन का यह प्रकार्य संदेश को भेजने वाले से दूर पहुँचाने में समर्थ बनाता है। लिखित संदेश उच्चरित संदेश की तरह उसी समय प्रेषित करना जरूरी नहीं होता, इसे बाद में भी उपलब्ध कराया जा सकता है। लिखित भाषा रूप की यह विशेषता उसे प्रसारण माध्यम के रूप में स्थापित करती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मौखिक संदेश अपने श्रोता तक पहुँचने के तुरंत बाद ही समाप्त हो जाता है जबकि लिखित संदेश एक वस्तु की तरह लंबे समय तक सुरक्षित रहता है। इसका अर्थ यह है कि बोले गए शब्द अपनी प्रकृति में अल्पजीवी (ephemeral) और स्वतःजात (Sponteneous) होते हैं। लेखन में शब्द स्थिर (stable) और गोचर (tangible) बनते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति (उक्ति) का केन्द्रीय प्रश्न यह होता है कि वक्ता उक्ति से क्या अर्थ ग्रहण करता है। यही उक्ति जब स्थिर होकर अपने भौतिक रूप अर्थात लिखित रूप में सामने आती है तब अर्थ वक्ता में नहीं पाठ में निहित हो जाता है। पाठ या लिखित रूप प्रसारण का व्यापकता देता है।

4. **सामाजिक नियंत्रण (Social Control) :** लेखन के स्थायित्व का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उसमें सामाजिक व्यवहार को नियमित और नियंत्रित करने की शक्ति होती है। यदि आप सरकारी कार्यालयों के कामकाज को देखें तो आपको 'आप यह मुझे लिखित रूप में दीजिए' (Can I have this in writing) जैसे अभिव्यक्तियाँ प्रयोग में मिलेंगी। इनसे यह तथ्य प्रमाणित होता है कि लोग मौखिक शब्दों की तुलना में लिखित शब्दों पर अधिक विश्वास करते हैं। अपने सामान्य जीवन में भी हम यह मानते हैं कि 'सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए' अथवा 'वो व्यक्ति कान का कच्चा है।' सामाजिक नियंत्रण के प्रकार्य के स्तर पर दूसरे पक्ष का संबंध भाषा से है। हम यह जान चुके हैं कि भाषा व्यवहार सामाजिक सम्प्रेषण का एक अंग है। अभिजात्य/उच्चशिक्षित वर्ग अपनी भाषा लिखता है। सामाजिक प्रक्रिया में इस वर्ग द्वारा प्रयुक्त भाषा रूप 'आदर्श' बनने लगता है। इसे सामाजिक गरिमा भी मिलती है और लिखित दस्तावेजों की स्थायी प्रकृति के कारण इस भाषा रूप को अन्य लोगों का भी पूरा समर्थन मिलने लगता है। इस प्रकार अभिजात्य वर्ग द्वारा प्रयुक्त और निर्धारित लिखित भाषा रूप पूरे समाज में 'मानक' (Standard) के रूप में स्थापित हो जाता है और इस प्रकार लेखन (Speech) का प्रतिदर्श (Model) बन जाता है।

5. **प्रतिक्रिया (Interaction) :** भाषायी सम्प्रेषण को वाक् की सीमाओं (Constrains) से स्वतंत्र करते हुए लेखन ने कई प्रकार की समन्वित (Coordinated) प्रतिक्रियाएँ निर्मित कीं। उदाहरण के लिए पत्र और वसीयतें एक निर्धारित व्यक्ति के लिए होती हैं। इनमें निहित संदेश उस व्यक्ति विशेष को और उसके व्यवहार को प्रभावित करता है। निर्देशा-पुस्तिका, पाठ-विधियाँ, बुनाई-कढ़ाई के नमूने आदि किसी विशिष्ट पाठक वर्ग को संबोधित नहीं होतीं। लेकिन यदि हम इनके अनुसार प्रतिक्रिया करें (भोजन बनाना चाहें, कढ़ाई करना चाहें) तो यह हमारे व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।

6. **सौन्दर्यशास्त्रीय प्रकार्य (Aesthetic function) :** 'साहित्य' शब्द साहित्य को कला माध्यम के रूप में सामने लाता है। इसमें संदेह नहीं कि साहित्य की मौखिक परंपरा भी होती है। आपने कवि सम्मेलनों, मुशायरों में मौखिक रूप में कविताएँ सुनी होंगी। पिछले कुछ वर्षों में साहित्य की वाचिक परंपरा तथा उसकी भाषिक अभिव्यंजना को लिखित साहित्य की तुलना में देखने की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। आज एक ही रचना में भाषा के मौखिक और लिखित रूप की पड़ताल भी की

जा रही है। आपने देखा होगा कि किसी कहानी या उपन्यास में प्रकृति आदि का विवरण देते हुए रचनाकार भाषा के लिखित रूप की मानकता से बँधा रहता है। इसके विपरीत जब वह विभिन्न वर्गों के लोगों के बीच संवाद प्रस्तुत करता है तो भाषा के मौखिक रूप को वह प्रधानता देता है। साहित्य में ऐसी अनेक विधाएँ (Genres) हैं जैसे उपन्यास, नाटक और कुछ विशेष कविताएँ जिनके स्वरूप की कल्पना भी उनके लिखित रूप के बिना नहीं की जा सकती। इसके साथ ही साहित्य में लिखित माध्यम को इतने स्तरों पर विकसित किया गया है कि उसे सुलेखन (Calligraphy) की अतिविकसित और समृद्ध कला के रूप में देखा जा सकता है। इसमें शाब्दिक कला को इतना सुन्दर रूप दिया जाता है जो देखने में अच्छा लगे। प्रिंट मीडिया ने लेखन की इस साज-सज्जा को अत्यंत आकर्षक बनाया है जो हमें बौद्धिक स्तर पर भी प्रभावित करती है। हिंदी के कुछ कवियों ने पंक्तियों की योजना और विराम चिह्नों के प्रयोग द्वारा लेखन के प्रस्तुतिकरण को नई दिया दी है। ऐसा करने से रचना में दृश्य सौंदर्यबोध उत्पन्न होता है।

## 2.8 बोलचाल की भाषा का लिप्यंकन

बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा का अंतर उस समय और भी स्पष्ट हो जाता है जब बोलचाल की भाषा की ध्वनियों का लिखित भाषा में लिप्यंकन करने का प्रयास किया जाता है। यों तो उच्चरित भाषा की तमाम ध्वन्यात्मक विशेषताओं को लिपिबद्ध करना असंभव कार्य है। उच्चरित भाषा में कुछ ऐसी रचनाएँ होती हैं जिनको लेखन में शब्दों में लिख कर ही व्यक्त किया जा सकता है। आपने नाटक, कहानी, उपन्यास में देखा होगा कि उच्चरित भाषा की इन चेष्टाओं को 'वह रोते हुए आया', 'वह जोर से हँसना लगा' के रूप में लिखकर व्यक्त किया जाता है। लेकिन इस प्रकार की सभी क्रियाओं या चेष्टाओं में किस-किस प्रकार की ध्वन्यात्मक विशेषताएँ निहित हैं, उन्हें लिखित शब्दों में व्यक्त कर पाना बड़ा ही कठिन कार्य होता है। उदाहरण के लिए कोई रोता है तो कैसे रोता है - धीरे-धीरे, जोर से, चीखकर, हिचकियाँ लेकर, सुबक-सुबक कर आदि। इन्हें हम मौखिक भाषा में तो सुन सकते हैं लेकिन इन्हें लेखन के माध्यम से व्यक्त करने के लिए लिखित भाषा में कोई साधन नहीं है। रोना, हँसना के अलावा चीखना, चिल्लाना, डाँटना, झिड़कना, बड़बड़ाना, बुदबुदाना, आहें भरना, हकलाना, नाक से बोलना आदि न जाने कितनी इसी प्रकार की क्रियाएँ और चेष्टाएँ हैं जिनका संबंध एक ओर हमारी शारीरिक-मानसिक अनुक्रिया के साथ जुड़ा होता है जैसे रोने में आँसू आना, चेहरा पीला पड़ना, आंख सूजना, नाक लाल होना तथा दूसरी ओर इनका संबंध उच्चारण पक्ष से जुड़ा होता है जैसे रोने के समय तरह-तरह की आवाज़ों के साथ धीमी या तेज़ गति से रोना। इन सभी चेष्टाओं/अनुक्रियाओं की उच्चारणात्मक प्रकृति को यथावत् लेखन में अभिव्यक्त कर पाना कठिन होता है। फिर भी सर्जनात्मक साहित्य में मौलिकता लाने के लिए लेखक अपनी ओर से पूरी कोशिश करते हैं कि उच्चरित भाषा की अधिकांश विशेषताओं को जहाँ तक संभव हो सके लिखित भाषा में व्यक्ति कर सकें। इसके लिए ये लेखक तरह-तरह की लेखिकीय तकनीकें अपनाते हैं। हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यास 'करवट' में उच्चरित भाषा के वैशिष्ट्य को लिखित भाषा में कई विधि से प्रकट करने का प्रयत्न किया है। कुछ उदाहरण देखिए -

- **घबरा कर झल्ला उठे (भागी किसके साथ है.....। उसे भी आज ही भागना था)**
- **आँखे निकाल के पूछा (जवान था?)**
- **गिड़गिड़ा कर बोले (दो दिन की मुहलत तो दिलवा दें साहब)**
- **धीरे से पूछा (सुना है साहब बहादुर का कोई खत बादशाह के पास पहुँचा है?)**
- **स्वर को मीठा बनाते हुए बोला (अरे जियो भैयाजी.....)**
- **तुनक कर कहा (जाओ, हम तुमसे बात नहीं करते।)**
- **झल्लाहट भरे स्वर में बोले (मुझे यह रकम नहीं चाहिए।)**
- **बिलखती आवाज में चाची बोली (हाँ भइया, कबहूँ मूड़ा न पिरावा। पूजा में बैठे-बैठे बैकुंठ चले गये।)**
- **प्रसन्नता से खिलकर बोली (बंसीधर मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। मेरे साथ एक गिलास बियर पियो)**

- **निसांस छोड़कर कहा (जाना ही पड़ेगा.....)**
- **उत्तेजित होकर कहा (मैं उस धोखेबाज़ औरत का खून कर दूँगा।)**
- **डपट कर कहा (उधर ही बैठो रहो। चुपचाप। बोलना कुछ नहीं, समझे?)**
- **परेशान होकर बोला (क-क-कौन है वह? मैं कत्ल के बारे में कुछ नहीं जानता।)**

आपने देखा होगा कि अंग्रेजी भाषा में अनेक प्रकार की अभिव्यक्तियों को प्रायः तिरछी लिखाई या 'इटेलिक्स' में लिखकर व्यक्त किया जाता है। हिंदी में भी आपको ऐसी स्थिति मिल जाएगी। किसी शब्द, अभिव्यक्ति या कथन की विशिष्टता व्यक्त करने या उसे महत्व देने के लिए इन्हें " " के बीच में रखा जाता है। हिंदी नाटकों में आपने देखा होगा कि लेखक बहुत-सी बातें कोष्ठक में लिखकर व्यक्त करते हैं। कोष्ठक में रंगमंच-निर्देश के साथ-साथ पात्रों की गतिविधियों के संकेत और सूचनाएँ दी जाती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि लिखित भाषा में उच्चारण संबंधी विविधताओं को व्यक्त करने के साधन कम हैं। फिर भी लेखक इन सीमित साधनों के माध्यम से ही उच्चारण की विविधताओं को व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

## 2.9 लिखित भाषा पर उच्चरित भाषा का प्रभाव

इस प्रकार के कुछ उदाहरण हम 'करवट' के उदाहरण में देख चुके हैं। अब हम यह देखने का भी प्रयास करेंगे कि लिखित भाषा में लेखक उच्चरित भाषा के ध्वन्यात्मक प्रभावों को किन-किन लेखिमीय प्रक्रियाओं द्वारा व्यक्त करते हैं। यहाँ हम ऐसी कुछ प्रमुख युक्तियों का विवेचन करेंगे जो उच्चारण (बोलचाल) की विशेषताओं को लिखित भाषा (मुद्रण) में दिखाने के लिए अपनाई जाती हैं।

1. **वर्णनात्मक शब्दों या पदबंधों का प्रयोग :** यह लेखन में सबसे सरल और सबसे अधिक प्रचलित तकनीक है। अधिकांश लेखक उच्चारणात्मक प्रभावों को व्यक्त करने के लिए वर्णनात्मक या विवरणात्मक शब्दों और पदबंधों का प्रयोग करते हैं। जैसे किसी के रोने को व्यक्त करना हो तो कहा जा सकता है कि 'वह फूट-फूट कर रोने लगी।' यहाँ 'फूट-फूट कर' पदबंध विवरणात्मक पदबंध है जो रोने के उच्चारणात्मक प्रभाव को अभिव्यक्त करने का कार्य कर रहा है। संसार की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य में आपको इस प्रकार के उदाहरण मिल जाएंगे। सभी लेखक अपने लेखन में इस तकनीक का प्रयोग करते हैं। कुछ लेखक अपने वर्णनों को स्पष्ट, संक्षिप्त, अर्थपूर्ण और सजीव बनाने के लिए उनमें उच्चारण संबंधी प्रभावोत्पादकता लाने के लिए बहुत परिश्रम करते हैं। यहाँ हम हिंदी साहित्य से कुछ उदाहरण नमूने के तौर पर प्रस्तुत कर रहे हैं :

   - **खामोश! <u>बिल्कुल</u> खामोश।' मनमोहन बाबू गरज पड़े।**
     **(अभागा, चन्द्रकिशोर जायसवाल)**
   - **वे <u>ठंडी साँस भर कर</u> कहती' एक बच्चा और हो जाता।**
     **(छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान)**
   - **आनंदी की <u>तेवरियों</u> पर बल पड़ गए,झुंझलाहट के मारे बदन में ज्वाला-सी दहक उठी।**
     **(बड़े घर की बेटी, प्रेमचंद)**

   कभी-कभी लेखक, विशेषकर नाटक-एकांकियों में दिए गए वाक्यांशों का उच्चारण पात्र को नाटक खेलते समय किस प्रकार करना है, इसका निर्देश कोष्ठक में देता चलता है। उदाहरण के लिए -

   - **नाम ही सुनो उनके खानों के तो जी थर्रा जाता है। (शब्दों की पूरी ध्वन्यात्मकता समेत) मुर्ग मुसल्लम। मुर्ग जाफ़रानी। रोस्ट बीफ़। ग्रिल्ड लैंब। तंदूरी रान। और इनसे पूछो क्या खाते हो तो लुप्प से कहेंगे (स्वर दबाकर) तुरई, घीया, सीताफल।**
     **(मौजूदा हालात को देखते हुए, मृणाल पांडे)**

2. **विराम चिह्नों का प्रयोग :** लेखन व्यवस्था में विराम-चिह्नों का प्रयोग एक ऐसी सुविधा है जिसका प्रयोग प्रत्येक लेखक करता है। मौखिक या बोलचाल की भाषा की ऐसी अनेक युक्तियाँ हैं (जैसे कहीं रुकना, कहीं बल देना, कहीं भिन्न-भिन्न अनुतान के साथ बोलना आदि) जिनका

प्रयोग प्रायः हर भाषा-भाषी बोलचाल के समय करता है। लिखित भाषा में इन्हीं समस्त मौखिक युक्तियों के लिए कुछ चिह्न बना लिए गए हैं। इन चिह्नों को ही 'विराम चिह्न' कहा जाता है। 'विराम' शब्द का अर्थ है - रुकना। उच्चरित भाषा में विभिन्न स्थानों पर वक्ता किस रूप में रुकता है, कितनी अवधि के लिए रुकता है, रुकते समय उसकी भंगिमा प्रश्न पूछने की है या आश्चर्य प्रकट करने की, इनके लिए लिखित भाषा में विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि विराम-चिह्नों का प्रयोग उच्चारण में आने वाले विराम, अल्पविराम, प्रश्न, आश्चर्य आदि को प्रकट करने के लिए किया जाता है। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखिए-

- **कितना अच्छा है, यह समाज की दीवार नहीं हैं।' लड़का कहता। 'विकेड हो' वह कहती, 'क्रुकेड हो, दोनों हो।**

  **(विपथा : रवीन्द्र कालिया)**

- **नया काल बोध - काल से नए संबंध का बोध - लय : काल-प्रत्यय का एक प्रकार - मात्रा पर नहीं, तनाव पर आधारित लय।**

  **(भवन्ती :अज्ञेय)**

- **..... मेहरू..... बत्ती बुझा दे..... उसने संयत, निर्विकार स्वर में कहा - देखती नहीं, मैं मर गई हूँ।**

  **(दहलीज़ : निर्मल वर्मा)**

- **अपने बच्चों को भी शायद वह इतना प्यार नहीं दे सकता।..... और अपना बच्चा! हुँ!..... अपना-पराया? अब तो सब अपने, सब पराए।.....**

  **(टुमरी : फणीश्वर नाथ रेणु)**

3. **वर्तनी में परिवर्तन :** कभी-कभी प्रादेशिक प्रभाव व्यक्त करने के लिए और कभी अपने व्यक्तित्व के प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिए लेखक शब्दों की वर्तनी में फेर-बदल कर देते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन आपको विज्ञापनों की भाषा में काफ़ी देखने को मिलेंगे। विज्ञापनों का उद्देश्य लोगों का ध्यान आकृष्ट करना होता है। वर्तनी में फेरबदल करके लिखने से लोगों का ध्यान उधर स्वतः चला जाता है। इसके साथ ही जब कोई पात्र किसी अन्य पात्र को चिढ़ाता है, उसका मजाक बनाता है, तब बोलचाल की भाषा में आए बदलावों को व्यक्त करने के लिए साहित्यकार शब्दों की वर्तनी को बदलते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई तुतलाकर बोलता है तो तोतली भाषा की अभिव्यक्ति के लिए शब्दों की वर्तनी का स्वरूप बदल दिया जाता है। एक उदाहरण देखिए -

   - **ताता, हम भी मलाई मत्थन थाएँदे। हम जलूल थाएँदे। तुमने तल्लू तो थिलाया, तामिनी तो थिलाया, हम भी थाएँगे।**

     **(करवट : अमृतलाल नागर)**

   हिंदी साहित्य में जो वर्तनी-परिवर्तन आपको दिखाई देंगे वे सब उच्चारण की मौलिकता बनाए रखने के उद्देश्य से ही किए जाते हैं। अगर कोई अंग्रेज हिंदी बोल रहा हो तो लेखक 'तुम साले इधर क्या कर रहे हो?' की जगह 'तुम इडर क्या करटा है?' लिखेगा। एक उदाहरण देखिए -

   - **मिस्टर तीनकोरी (तिनकौड़ी) शाएब को टू थाउजेंड रूपीज़ फौरन लाके डेदो। उनका हुक्म हाय। नईं दिया तो तुमारा ढाका जंगल का कल कौंसिल, खटम हो जाएगा। मालूम?**

   इसी तरह के अन्य उदाहरण भी देखे जा सकते हैं जिसमें लेखक पात्रों के क्षेत्र, परिवेश और वर्ग के अनुरूप वर्तनी में परिवर्तन ले आता है :

   - **अरी बहू! पोस्टमैन सैप के लिए दरी तो डार दे। चा-तमाकू पिला।**

     **(पोस्टमैन : शैलेश मटियानी)**

   - **ई घोड़ी जो दरवज्जे पर बंधी है, का मोल लिए हौ भइया?**

4. **मोटे गाढ़े अक्षरों में लिखना :** जब लेखक किसी बात पर बल देना चाहता है, कोई महत्वपूर्ण बात बताना चाहता है या किसी विशेष कथन की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता है तो उस वाक्य या कथन को सामान्य लिखावट की तुलना में मोटे-गोढ़े अक्षरों में लिख देता है। अंग्रेजी भाषा में यह कार्य 'कैपिटल' अक्षरों का प्रयोग कर के किया जाता है क्योंकि अंग्रेजी में

वर्तनी के दो रूप उपलब्ध हैं। हिंदी में यही कार्य मोटे-गाढ़े अक्षरों, बड़े प्रिंट के प्रयोग के माध्यम से किया जाता है। कुछ उदाहरण देखिए -

- 'इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि **भाषिक प्रतीकों की व्यवस्था अपनी प्रकृति में संरचनात्मक और प्रतिफलन में भाषा सापेक्ष** होती है।'

(भाषा विज्ञान : सैद्धान्तिक चिंतन - रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव)

- 'यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि **भाषा-बोली भेद की बोधगम्यता का आधार तर्कसंगत नहीं।**'

(भाषा विज्ञान : सैद्धान्तिक चिंतन - रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव)

- 'भाषा के आंतरिक प्रकार्य यह प्रकट करते हैं कि **भाषा क्या है?** दूसरी ओर भाषा के बाह्य प्रकार्य यह उद्घाटित करते हैं कि जातीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में **भाषा क्या करती है?**'

(हिंदी भाषा का समाजशास्त्र : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव)

5. **टंकित सामग्री में अंतराल या 'स्पेस' छोड़कर लिखना :** स्पेस या अंतराल छोड़कर लिखने से भी लेखक बोलचाल की भाषा की स्वाभाविकता को लेखन में बनाए रखने का प्रयास करते हैं। कुछ उदाहरण देखिए -

- **इतना सुनना था कि मनसुख क्रोध से काँपने लगा ..... तुझे घिन आती है..... तो किस गधे ने तुझे यहाँ भेजा था..... नाम क्या है तुम्हारा?**
- **जब कहीं से खाना बनने की सुगंध आती है तो जल्दी-जल्दी साँस लेने लगता हूँ - हलवा.....पुलाव.....मीट.....पकौड़े.....।**
- **क्या मैं भी उस औरत की तरह मायके नहीं जा पाऊँगी?..... और .....क्या? मैं भी.....।**

6. **वर्णों तथा शब्दों की पुनरावृत्ति :** शब्दों एवं वर्णों की पुनरावृत्ति से भी लेखक उच्चारण की वास्तविकता को लेखन में उतारने का प्रयास करते हैं। किसी भी चीख, पुकार, जोर से बोलना, बल देकर बोलना इन सभी ध्वन्यात्मक प्रभावों को लेखन में शब्दों और वर्णों की पुनरावृत्ति के माध्यम से प्रदर्शित करने की चेष्टा की जाती है। कुछ उदाहरण देखिए -

- 'पुनवा की माँ घबराकर बोली, देख.....देख, देख तो..... हाँ.....हाँ कहते कहते वह सहसा रुक गई। पाँच-सात कदम ही आगे बढ़ पाई थी कि वह पुनः बोली हाँ.....हाँ .....हाँ.....हाँ.....।'
- 'व..... .....ह! मैं कहता अब तुम जीवन का रहस्य समझ पाई हो।'

**बोध प्रश्न**

4. निम्नलिखित पंक्तियों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए :

(i) संरचनात्मक भाषाविज्ञान में भाषा के किस रूप को प्रधानता दी गई?

.....

.....

(ii) उच्चरित भाषारूप को सीखने की प्रक्रिया कैसी होती है?

.....

.....

(iii) भाषा का कौन सा रूप सर्जनात्मक साहित्य का आधार बनता है?

.....

.....

(iv) वाक् की व्यापकता के बारे में विद्वान क्या कहते हैं?

.....

.....

(v) गणेश के साथ मान्यता क्या है?

.....

.....

(vi) स्वरों और व्यंजनों का निर्धारण किस आधार पर किया गया है?

.....

.....

(vii) लिखित भाषा के स्थायी होने से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

(vii) वाक् सम्प्रेषण का क्षेत्र सीमित होने का मूल कारण क्या है?

.....

.....

(ix) लेखन को दूरी का माध्यम क्यों कहा गया है?

.....

.....

## 2.10 सारांश

इस इकाई में आपको भाषा के दो रूपों - बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा की जानकारी दी गई। इस इकाई से आप दोनों भाषा रूपों के स्वरूप, प्रकृति, प्रकार्य, प्रयोग-क्षेत्र और उपादेयता को जान-समझ सकेंगे। यह इकाई आपको दोनों भाषारूपों की सम्प्रेषणपरक आवश्यकताओं तथा एक-दूसरे पर पड़ने वाले पारस्परिक प्रभावों के बारे में भी विस्तृत जानकारी देती है। आपने इस इकाई में देखा कि मनुष्य के पास विचारों के आदान-प्रदान तथा सम्प्रेषण के लिए सशक्त माध्यम के रूप में भाषा के ये दोनों रूप किस प्रकार अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। आपने यह भी जाना कि मानव-समाज में सम्प्रेषण एक अनिवार्यता है। भाषा के माध्यम से सम्प्रेषण ने मानव-सभ्यता और संस्कृति के आश्चर्यजनक विकास प्रदान किया है। इस विकास में उच्चरित और लिखित दोनों भाषारूपों का योगदान रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से बोलचाल की भाषा लिखित भाषा से हज़ारों साल पुरानी है। इसीलिए अनेक भाषा-वैज्ञानिकों ने बोलचाल की भाषा को ही 'भाषा' की संज्ञा प्रदान की। उन्होंने लिखित भाषा का स्थान गौण माना। परंतु जहाँ तक सम्प्रेषण का सवाल है दोनों भाषारूपों का अपना-अपना स्थान है। वास्तव में देखा जाए तो समाज में उच्चरित और लिखित भाषा की व्यवस्था परिपूरक व्यवस्था (Complementry System) है। अतः कोई किसी से छोटा-बड़ा नहीं है और न हो सकता है। दोनों का प्रयोग समाज अपनी भिन्न-भिन्न सम्प्रेषणात्मक आवश्यकताओं के लिए करता है। अतः दोनों को एक-दूसरे की जगह पर भी नहीं रखा जा सकता।

इस इकाई में आप देखेंगे कि इन दोनों भाषारूपों में कुछ सम्प्रेषणापरक तत्वों के आधार पर जहाँ समानताएँ हैं वहाँ अनेक तत्व ऐसे भी हैं जो इन दोनों को एक-दूसरे से अलग भी करते हैं। बोलचाल की भाषा में जहाँ उच्चारणात्मक और ध्वन्यात्मक इकाइयों का प्रयोग किया जाता है वहाँ लिखित भाषा में लेखिमीय इकाइयों का। इस प्रमुख अतर के अलावा भी दोनों में अनेक भिन्नताएँ हैं। जैसे दोनों की संरचना में काफ़ी अंतर है। लिखित भाषा की संरचना जहाँ व्यवस्थित, सुगठित, पूर्ण तथा व्याकरणिक नियमों से बंधी रहती हैं वहाँ उच्चरित भाषा में सरल, शिथिल, अपूर्ण, तथा व्याकरणिक नियमों से मुक्त संरचनाएँ भी देखने को मिलती हैं। बोलचाल की भाषा में शब्दों, पदबंधों, उपवाक्यों की पुनरावृत्ति की प्रवृत्ति आपको बहुत मिलेगी। जबकि लिखित भाषा में लेखक सचेत और सजग होकर लेखन करता है।

वह अपनी लिखी हुई सामग्री को बार-बार पढ़कर सुधार सकता है लेकिन बोलचाल की भाषा में जो कुछ बोल दिया जाता है, उसमें सुधार का अवसर नहीं होता। इसीलिए विद्वान यह मानते हैं कि बोलचाल की भाषा समय सापेक्ष, अस्थायी और गतिशील होती है जबकि लिखित भाषा देश सापेक्ष, स्थायी तथा स्थिर होती है। इसीलिए लिखित भाषा को दीर्घकाल तक संचित किया जा सकता है।

आपने यह भी देखा कि बोलचाल की भाषा के व्यवहार के समय वक्ता और श्रोता एक दूसरे के समक्ष रहते हैं। लिखित भाषा का पाठक उसके लेखक के सामने नहीं होता। इसीलिए लेखक को जो भी बात अपने लेखन में कहनी होती है, उसे पूरे संदर्भों को स्पष्ट करते हुए कहने का वह प्रयत्न करता है। मौखिक वार्तालाप में वक्ता और श्रोता आमने-सामने होते हैं अतः वे अस्पष्ट स्थलों को स्पष्ट कर सकते हैं अतः वहाँ अनेक भाषिक इकाइयों को छोड़ा जा सकता है।

आपने इस इकाई में देखा कि लिखित भाषा में कुछ ऐसी युक्तियाँ भी होती हैं जिनका प्रयोग लेखक अपने लेख में करता है, जैसे - विराम चिह्न, अनेक प्रकार की लेखिमीय आकृतियाँ, रंग आदि। बोलचाल की भाषा में यह सुविधा नहीं होती। लेकिन बोलचाल की भाषा की अपनी विशेषताएँ होती हैं, जैसे - सुरतान, बलाघात आदि जिन्हें जब लेखक अपने लेखन में व्यक्त करना चाहता है तो उसके सामने कई कठिनाइयाँ आती हैं। फिर भी वह अनेक प्रकार के विराम चिह्न, कोष्ठकों, आड़ी-तिरछी लिखाई, गाढ़े-मोटे अखरों का प्रयोग करके तथा पदों, पदबंधों, वाक्यों को रेखांकित करके उच्चरित विशेषताओं को लेखन में लाने का प्रयास करता है।

इस इकाई में लिखित भाषा और उच्चरित भाषा के अंतरों पर भी जगह-जगह प्रकाश डाला गया है। दोनों की विशेषताओं को भी तुलनात्मक ढंग से समझाया गया है। आपने शब्दकोश, व्याकरण, संरचना, प्रयोग-क्षेत्र के संदर्भ में तथा भिन्न-भिन्न सम्प्रेषणपरक आवश्यकताओं की दृष्टि से इन दोनों भाषारूपों के प्रमुख अंतरों का परिचय भी इस इकाई में प्राप्त किया है। आपने यह भी देखा कि बोलचाल की भाषा में लिखित भाषा अधिक एकरूप, औपचारिक और मानक होती है।

दोनों भाषिक रूपों में अनेक अंतर हैं। इन अंतरों के बावजूद समाज में ये दोनों भाषारूप किस प्रकार एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, इसका भी आपने अध्ययन किया। आपने यह भी जाना कि जब लेखक बोलचाल की भाषा को लिपिबद्ध करता है तो किन युक्तियों का प्रयोग करता है।

## 2.11 शब्दावली

**उच्चारण अवयव** - भाषा बोलने में सहयोग करने वाले अंग जैसे दाँत, होंठ, जिह्वा, तालु आदि

**उदात्त** - उठता हुआ

**उपकरण** - यंत्र जैसे माइक

**अकर्तृवाच्य** - ऐसा वाक्य जिसमें एक ही भाषा के दो रूप प्रकाशित भिन्नता के साथ प्रचलित होते हैं।

**गौण** - जो प्रमुख न हो

**प्रबलन** - किसी बात पर बल देना

**मानक** - वह भाषारूप जिसे पूरा समाज 'आदर्श' अथवा 'परिनिष्ठित' स्वीकार करता है।

**मुख विवर** - मुँह के अंदर का स्थान या मार्ग

**रेखीय** - रेखाओं से बने

**लिप्यंकन** - उच्चरित भाषा को लिपिबद्ध करना, अर्थात किसी लिपि को माध्यम बनाकर लिखना।

**विकल्पन** - विकल्प के रूप में एक ही भाषा की कई शैलियों का प्रयोग होना।

**समाजीकरण** - सामाजिक बनने की प्रक्रिया

**स्लैंग** - वे प्रयोग जो परिनिष्ठित भाषा में नहीं आते।

## 2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें


श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, 1978 — भाषा शिक्षण, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन

श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, 1994 — हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन

श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, 1980 — हिंदी भाषा : संरचना और प्रयोग, नई दिल्ली : आलेख प्रकाशन

Chapman, R. 1984, — The treatment of Sounds in language and literature Oxford : Blackwell

James R. & Gregory, — Imaginative speech and writing, London : Nelson R.G. 1966

Haugen, E. 1972, — The ecology of language. Stanferd University Press

Kroll, B.M. 1981 — Development relationship between speaking & Writing, Urbana : NCTE.


## 2.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1. (i) x (ii) x (iii) ✓ (iv) x (v) x
   (vi) ✓ (vii) ✓ (viii) x (ix) ✓ (x) x
   (xi) ✓ (xii) x (xiii) ✓ (xiv) x (xv) ✓

2. (i) क (ii) क (iii) ख (iv) ख (v) ख
   (vi) ख

3. (i) मानक (ii) रूढ़ (iii) दृश्य संकेतों (iv) उच्चारण अवयव (v) आगत

4. स्वयं उत्तर दें।